



**B.A PART-1 (HONS. & SUB.)
PAPER- GENERAL PSYCHOLOGY
TOPIC- LEARNING**

**DR. PRABHA SHREE (GUEST FACULTY, DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
VAISHALI MAHILA COLLEGE HAJIPUR, B.R.A BIHAR UNIVERSITY,
MUZAFFARPUR)**

सीखना (LEARNING)

सामान्य रूप से सीखना व्यवहार में परिवर्तन है, परंतु सभी प्रकार के व्यवहार में परिवर्तन को सीखना नहीं कहा जाता है क्योंकि व्यवहार में परिवर्तन थकान, दवा खाने से, बीमारी से या परिपक्वता आदि से भी होता है। मनोविज्ञान में सीखने का तात्पर्य मात्र उन्हीं परिवर्तनों से होता है जो अभ्यास या अनुभूति के फलस्वरूप होते हैं। सामान्यतः इस प्रकार के परिवर्तन का उद्देश्य व्यक्ति को वातावरण में समायोजन करने में मदद करने से होता है।

परिभाषा

- “सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभूति या अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है” _____Sartain, North, Strange & Chapman, 1973
- “ सीखना व्यवहार या व्यवहारात्मक अन्तः शक्ति में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है जो अनुभूति के कारण होता है और जिसे अस्थायी शारीरिक अवस्थाओं जैसे वे अवस्थाएं जो बीमारी, थकान या औषधि लेने आदि से उत्पन्न होते हैं, के रूप में आरोपित नहीं किया जा सकता है” _____Hergenhahn, 1988

स्वरूप

- परिभाषाओं का संयुक्त विश्लेषण करने पर सीखने का स्वरूप बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है:

व्यवहार
में
परिवर्तन

परिवर्तन
अभ्यास
या
अनुभूति
के
फलस्वरूप

अपेक्षाकृत
स्थायी
परिवर्तन

सीखना व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है:

- यह परिवर्तन एक अच्छा एवं अनुकूल परिवर्तन भी हो सकता है या खराब एवं कुसमंजित परिवर्तन भी हो सकता है।
- जैसे साइकिल चलाना, स्वेटर बुनना सीखना, ड्राइविंग सीखना आदि व्यवहार में एक अच्छा एवं अनुकूल परिवर्तन का उदाहरण है।
- परंतु चोरी करना, झूठ बोलना आदि ऐसी कई बुरी आदतें, खराब एवं कुसमंजित परिवर्तन के उदाहरण हैं।

व्यवहार में परिवर्तन अभ्यास या अनुभूति के फलस्वरूप होता है:

- अभ्यास से तात्पर्य किसी प्रकार के प्रशिक्षण से होता है जिसमें व्यक्ति किसी प्रक्रिया को बार-बार दोहराते हुए तथा अपनी गलतियों को सुधारते हुए सीखता है, जैसे टाइपिंग सीखना, साइकिल चलाना सीखना, मोटरसाइकिल चलाना सीखना, किसी भाषा को सीखना आदि।
- अनुभूति से तात्पर्य व्यक्ति की आकस्मिक अनुभूतियों से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाता है जैसे गर्म तवे पर हाथ पड़ने पर व्यक्ति अचानक ही मात्र एक बार के अनुभव में ही यह सीख लेता है कि गर्म तवे पर हाथ नहीं रखना चाहिए।

व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है:

- अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन व्यवहार में वैसे परिवर्तन को कहा जाता है जो एक खास समय तक एक तरह से स्थायी होता है उस खास समय की कोई निश्चित अवधि नहीं होती है वह कुछ दिन का भी हो सकता है तथा कुछ महीने का भी हो सकता है उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति Job interview आदि के लिए किसी नई भाषा जैसे – फ्रेंच, जापानी आदि किसी भाषा को सीखना प्रारंभ करता है इसके लिए वह किसी शिक्षण संस्थान में जाता है और कुछ महीने अभ्यास करने के बाद वह उस भाषा को बोलना सीख जाता है लेकिन हो सकता है कि वह 5 या 6 महीनों के लिए अपने घर आए और वह अभ्यास न कर पाए तो हो सकता है कि ऐसी परिस्थिति में वह उस सीखे गए भाषा को भूलने लगे या उसे बोलने में फिर कोई कठिनाई हो या त्रुटि हो। तब यह कहा जाएगा कि व्यक्ति के व्यवहार में हुआ परिवर्तन 5 या 6 महीने के लिए ही स्थायी था।
- अगर व्यवहार में हुआ परिवर्तन क्षणिक होता है अर्थात कुछ मिनट के लिए ही होता है जैसा कि motivational state जैसे भूख, प्यास आदि में होता है तो उसे हम सीखना नहीं कहते हैं। हाउस्टन (Houston) 1976 ने इसलिए कहा है, “ व्यवहार में प्रेरणात्मक स्थिति में उतार-चढ़ाव होने से उत्पन्न अस्थायी परिवर्तन सीखने की श्रेणी में नहीं आते हैं।”